ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का उनके वैयक्तिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन

विनीता लाल यादव सहायक — प्राध्यापक, शिक्षा संकाय सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा उत्तराखण्ड

डॉ0 शान्ति नयाल प्रोफेसर — शिक्षा अवकाश प्राप्त लोअर माल रोड, खत्याड़ी अल्मोड़ा उत्तराखण्ड

1प्रस्तावना –

सतत सामाजिक विकास की प्रक्रिया में सामाजिक बुद्धिमता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव एक बुद्धिमान सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहता है और समाज में आयोजित विविध प्रकार के सामाजिक उत्सवों और कार्यक्रमों में सहभागिता करता हैं। परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक बुद्धिमता में वृद्धि होती है। चूँकि सामाजीकरण की प्रक्रिया, सामाजिक बुद्धिता वृद्धि का आधार माना जाता है। जॉनसन एण्ड जॉनसन के अनुसार "सामाजीकरण एक सामाजिक सीख है जो सीखने वालों को सामाजिक भूमिकाओं का निर्वहन करने के योग्य बनाता है।"

सामाजिक बुद्धिमता और सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में उ च सामाजिक सम्बन्ध होता है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए सामाजिक बुद्धि का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। उ च सामाजिक बुद्धि वाले शिक्षक अपने विद्यार्थियों में उ च सामाजिक बुद्धिमता का सृजन करने में सक्षम एवं सफल होते हैं। इस प्रकार माध्यमिक स्तर पर सामाजिक बुद्धिमता का एक विशेष महत्व होता है।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ई0एल0 थार्नडाइक (1920) ने सामाजिक बुद्धिमता की खोज की थी। तदुपरान्त गिलफोर्ड (1967) ने व्यवहारिक बुद्धि का मॉडल प्रस्तुत किया था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक बुद्धि को लोकप्रिय बनाने का कार्य अल्बी ट (2006) ने किया था। सामाजिक बुद्धि के निम्नांकित पाँच अवयव माने जाते हैं।

1. किसी व्यक्ति विशेष की सामाजिक अन्तःक्रिया में स्वयं को प्रस्तुत करने की योग्यता। 2. विभिन्न सामाजिक स्थितियों को पढ़ने एवं समझने की योग्यता।
3. सामाजिक भूमिकाओं, मानदण्डों और लिपियों का ज्ञान होना। 4. पारस्परिक समस्या कौशल और
5. सामाजिक कार्य भूमिका निर्वहन कौशल।

मार्टिन नूसरे और दहल (2001) ने सामाजिक बुद्धि के तीन विशेष अवयव बताये हैं। 1. सामाजिक सूचना तैयार करना।
2. सामाजिक जागरूकता।
3. सामाजिक कौशल।

इनमें प्रथम दो कारक ज्ञानात्मक सूझ से सम्बन्धित होते हैं, जो जटिलतम सामाजिक सूचनाओं को समझने और व्याख्या करने में सहायक होते हैं। तीसरा कारक सामाजिक कौशलवृहद रूप में भिन्न होता है और किसी व्यक्ति विशेष की सामाजिक भूमिकाओं को निर्वहन करने की धनात्मक विश्वासों से सम्बन्धित होता है (फ्री बोर्ज 2005)।

शोध समस्या का औचित्य– माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षक समाज एवं विद्या मन्दिरों के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करते हैं। वर्तमान ऑनलाईन एवं मोबाईल युग में शैक्षिक उद्देश्यों को निर्धारित समय तक प्राप्त करने तथा पाठ्यक्रम को शिक्षार्थियों तक पहुँचाने के लिए शिक्षकों को सामाजिक बुद्धिमता की नितान्त आवश्यकता होती है। सामाजिक बुद्धिमता वाले शिक्षक कक्षा–कक्ष के शैक्षिक पर्यावरण को आनन्दपूर्ण बनाने में सक्षम होते हैं। सामाजिक बुद्धि से परिपूर्ण शिक्षक विद्यार्थियों को प्रेरित करने में सफल होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का लिंग, अधिवास और शैक्षिक संकाय के संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन करना सार्थक प्रतीत होता है।

माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि में लिंग, अधिवास और शैक्षिक संकाय के आधार पर कोई सार्थक अन्तर तो नहीं होता है ? अतः प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का उनके लिंग, अधिवास और शैक्षिक संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर ज्ञात करना दूसरा महत्वपूर्ण औचित्य है। प्रस्तुत शोध पत्र का तीसरा महत्वपूर्ण औचित्य त्वरित गति से परिवर्तनशील सामाजिक शैक्षिक परिदृश्य में सामाजिक बुद्धिमता पूर्ण शिक्षा निर्धारित समय में अधिकतम शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं ? सामाजिक बुद्धि में श्रेष्ठ शिक्षक कक्षा–कक्ष के कुशल शैक्षिक प्रबन्धन में सक्षम होते हैं जिससे कक्षा–कक्ष का शैक्षिक वातावरण आनन्दमय होता है जो विद्यार्थियों को टिकाऊ अधिगम प्रदान करता है। परिणामस्वरूप रूचिपूर्ण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में वृद्धि होती है। सामाजिक बुद्धि में श्रेष्ठ शिक्षक प्रभावी ढंग से और पूर्ण आत्म विश्वास से कक्षा–कक्ष अन्तःक्रिया करने की क्षमता में वृद्धि करते हैं जो शिक्षकों को तनावपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने में सहायक होते हैं।

प्रयुक्त चरों की परिभाषा :

1. सामाजिक बुद्धि– सामाजिक बुद्धि एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्तियों के साथ अ छी तरह से बातचीत करने की क्षमता है। जिससे अक्सर लोगों के साथ व्यवहार करने का कौशल या चातुर्य कहा जाता है। यह एक सीखी हुई क्षमता है जिसमें परिस्थतिजनक जागरूकता, सामाजिक गतिशीलता की समझ और आत्म जागरूकता की एक अ छी मात्रा शामिल है। शोधकर्ताओं द्वारा परिभाषित सामाजिक बुद्धिमता के चार योगदान देने वाले पहलू बतलाये हैं।
1. सम्बन्ध कौशल
2. सामाजिक जागरूकता
3. आत्म जागरूकता
4. स्वनियमन

2. अधिवास– प्रस्तुत शोध में अधिवास से तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि से है। अर्थात् जो शिक्षक स्थायी रूप से ग्रामीण अंचल में रहते हैं उनको ग्रामीण श्रेणी में और जो शिक्षक स्थायी रूप से शहरी क्षेत्र में रहते हैं उनको शहरी क्षेत्र के अर्न्तगत रखा गया है।

3. शैक्षिक संकाय– प्रस्तुत शोध पत्र में स्नातकोत्तर स्तर पर कला एवं विज्ञान की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् माध्यमिक स्तर पर सेवा में लगे शिक्षकों से है। अतः सामाजिक बुद्धिमता का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

4. वैयक्तिक पृष्ठभूमि– प्रस्तुत शोध पत्र में वैयक्तिक पृष्ठभूमि का आशय माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों का लिंग, अधिवास और शैक्षिक संकाय से है।

शोध समस्या के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए निम्नांकित तीन उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।
1. माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का उनके लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का उनके अधिवास के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का उनके शैक्षिक संकाय अर्थात् कला एवं विज्ञान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना– प्रस्तुत शोध पत्र में निम्न तीन शून्य परिकल्पनाऐं तैयार की गयी तथा उनका परीक्षण किया गया।
1. माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि में उनके लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि में उनके अधिवास के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि में उनके शैक्षिक संकाय के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

जनसंख्या– उत्तराखण्ड राज्य के जनपद अल्मोड़ा के शैक्षिक सत्र 2022–23 के माध्यमिक स्तर पर सेवारत सभी शिक्षक प्रस्तुत शोध की जनसंख्या थी।

न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन विधि– अध्ययन की सुविधा के लिए जनसंख्या में से 152 सेवारत शिक्षकों को यादृ छिक चयन विधि से चयनित किया गया।

शोध उपकरण– प्रस्तुत शोध पत्र के निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए प्रोफेसर डॉ0 एन. के. चड्ढा एवं उषा गनेशन द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक बुद्धि मापनी (ै) का उपयोग किया गया।

शोध परिणाम– प्रस्तुत शोध अध्ययन के उपरान्त निम्न शोध परिणाम प्राप्त हुए।

तालिका 1 माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

लिंग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	ज मूल्य	सार्थकता स्तर
महिला	58	122	8.12	7.75	0.01
पुरूष	94	111	9.15		

तालिका 1 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक बुद्धि में माध्यमिक स्तर पर सेवारत महिला शिक्षक, पुरूष शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठ पायी गयी।सामाजिक बुद्धिमता में माध्यमिक स्तर पर सेवारत महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षकों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर पाया गया। यह अन्तर सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया (जत्र7ण्75)।

सामाजिक बुद्धिमता में महिला शिक्षिकाओं का, पुरूष शिक्षकों से उ च होने का

कारण यह हो सकता है कि महिला शिक्षिकाओं का कार्य क्षेत्र एवं सामाजिक अन्तःक्रिया का क्षेत्र पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक होता है। महिला शिक्षिकाऐं, पुरूष शिक्षकों की तुलना में नौकरी के साथ–साथ घरेलू कार्यों एवं सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करने में अधिक व्यस्त रहती हैं।

अतः शून्य परिकल्पना, "माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धिमता में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है," अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 2 माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों का अधिवास के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

लिंग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	ज मूल्य	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	88	112	9.50	6.71	0.01
शहरी	64	122	8.70		

तालिका 2 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों में शहरी शिक्षक, ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठ पाये गये। सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों में ग्रामीण शिक्षक एवं शहरी शिक्षकों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर पाया गया। यह अन्तर सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक था (जत्र6ण्71)।

शहरी शिक्षकों के सामाजिक बुद्धि में श्रेष्ठ होने का कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण परिवेश की अपेक्षा शहरी परिवेश में सामाजिक अन्तःक्रियाऐं अधिक होती हैं। शहरी क्षेत्रों में विविध प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, मनोरंजन के कार्यक्रम और अन्य सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियां अधिक होती हैं। परिणामस्वरूप सामाजिक बुद्धिमता में शहरी शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठ थे।

अतः शून्य परिकल्पना, "माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धिमता में अधिवास के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है" अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 3 माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि प्राप्ताकों का संकाय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

लिंग	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	ज मूल्य	सार्थकता स्तर
विज्ञान	54	104	9.41	3.03	0.01
कला	98	109	10.12		

तालिका 3 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों में कला संकाय के सेवारत शिक्षक, विज्ञान संकाय के सेवारत शिक्षकों की तुलना में उ च पाये गये। सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों में कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर पाया गया। यह अन्तर सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक था (जत्र3ण्03)।कला संकाय के शिक्षकों में सामाजिक बुद्धि उ च होने का कारण यह हो सकता है कि कला संकाय के शिक्षकों को, विज्ञान संकाय के शिक्षकों की तुलना में सामाजिक जीवन में अधिक सामाजिक अन्तःक्रिया करने के अवसर प्राप्त होते हैं। विज्ञान संकाय के शिक्षक अपने विद्यार्थी जीवन से ही सामाजिक जीवन की अपेक्षा प्रयोगशालाओं में अधिक समय व्यतीत करते हैं। इस परिणाम का सुमन लता सक्सेना और जैन (2013), गक्खर और बेन्स (2009) एवं दीक्षा खम्पा

(2020) ने समर्थन किया है। जोन्स एवं डे (1991) ने सामाजिक बुद्धि को सामाजिक समस्या समाधान योग्यता से सम्बन्धित पाया।

अतः शून्य परिकल्पना 3, "माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की सामाजिक बुद्धिमता में शैक्षिक संकाय के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है" अस्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

।सइतमबीजए ज्ञण ;2006द्धण ॅवबपंस प्दजमससपहमदबम रू जीम छमू ैबपमदबम व`िनबबमेण ̆पसमलए त्मजतपमअमक तिवउ ीजजचेरूध्ध्ेचतपदहमतसपदाण्बवउ ज्ञींउचंए क्पोीं ;2020द्धण । बवउचंतंजपअम `जनकल वि जमंबीपदह ंचजपजनकमए `वबपंस ंदक उवतंस पदजमससपहमदबम वि चनचपस.जमंबीमते पद तमसंजपवद जव जीमपत ष्ब्ज ज्ञदवूसमकहमण चीण्कण जीमेपे `नइउपजजमक पद ज्ञनउंनद न्दपअमतेपजलए क्मचंतजउमदज वि म्कनबंजपवद ज्ञनउंनद न्दपअमतेपजल छंपदपजंसण